

Chapter-3

मानो हि महतां धनम्

2 MARKS QUESTIONS

1. महतां किं धनम्?

उत्तरम् :

मानो हि महतां धनमस्ति।

2. क्षात्रधर्मरता का आसीत्?

उत्तरम् :

क्षात्रधर्मरता विदुरा आसीत्।

3. विदुरा कं जगहे?

उत्तरम् :

विदुरा ओरसपुत्रं जगहें ।

4. द्विषतां हर्षवर्धनम् कः आसीत्?

उत्तरम् :

द्विषतां हर्षवर्धनम् विदुरायः पुत्र आसीत् ।

5. विदुरा स्वपुत्रं किं उक्तवती?

उत्तरम् :

विदुरा स्वपुत्रं उक्तवती-'हे कापुरुष! उत्तिष्ठ एवं पराजितः मा शेष्व।'

6. विदुरयानुसारेण कः लोके कीर्तिं लभते?

उत्तरम् :

विदुरयानुसारेण यः मानवः स्वबाहुबलमाश्रित्य अभ्युज्जीवति सः लोके कीर्तिं लभते।

7. वाक्यसायकैः प्रणुन्नः सः किमिव क्षिप्तः?

उत्तरम् :

वाक्यसायकैः प्रणुन्नः सः सदश्व इव क्षिप्तः।

8. 'मानो हि महतां धनम्' पाठे विदुरया स्वपुत्राय किं उपदिष्टम्?

उत्तरम् :

'मानो हि महतां धनम्' पाठे विदुरया स्वपुत्राय कायरतां विहाय स्व स्वाभिमानं पुनः प्राप्तुं उपदिष्टम्।

9. परत्र शुभां गतिं कः लभते?

उत्तरम् :

यः स्वबाहुबलमाश्रित्य अभ्युज्जीवति परत्र सः शुभां गतिं प्राप्नोति।

10. विदुरायाः पुत्रस्य किं नाम आसीत्?

उत्तरम् :

विदुरायाः पुत्रस्य सञ्जयः नाम आसीत्।

11. दीर्घदर्शिनी श्रुतवाक्या का आसीत्?

उत्तरम् :

दीर्घदर्शिनी श्रुतवाक्या विदुरा आसीत्।

12. निर्मानो बन्धुशोकदः कस्य विशेषणे स्तः?

उत्तरम् :

निर्मानो बन्धुशोकदः सञ्जयस्य विशेषणे स्तः।

4 MARKS QUESTIONS

(1) विदुरा नाम वै सत्या जगहें पुत्रमौरसम्।

निर्जितं सिन्धुराजेन शयानं दीनचेतसम् ।

(i) विदुरा कं जगहे?

(ii) पुत्रः केन निर्जितः?

(iii) विदुरा पुत्रं किमर्थम् जगहे?

उत्तराणि:

(i) विदुरा औरसं पुत्रम् जगहें।

(ii) पुत्रः सिन्धुराजेन निर्जितः।

(iii) यतः 'विदुरायाः पुत्रः' सिन्धुराजेन निर्जितः आसीत्।

2. य आत्मनः प्रियसुखे हित्वा मृगयते श्रियम्।

अमात्यानामथो हर्षमादधात्यचिरेण सः ॥

(i) आत्मनः किं हित्वा मृगयते?

(ii) सः अचिरेण केषां हर्षं आदधाति?

(iii) कः किम् आदधाति?

उत्तराणि:

(i) आत्मनः प्रियसुखम् हित्वा मृगयते।

(ii) सः अचिरेण अमात्यानाम् हर्षम् आदधाति ।

(iii) यः आत्मनः प्रियसुखं हित्वा श्रियम् मृगयते सः अचिरेण अमात्यानां हर्षम् आदधाति।

3. स्वबाहुबलमाश्रित्य योऽभ्युज्जीवति मानवः।

स लोके लभते कीर्तिं परत्र च शुभां गतिम्॥

(i) स्वबाहुबलम् आश्रित्य कः जीवति?

(ii) सः परत्र कां लभते?

(iii) यः स्वबाहुबलमाश्रित्य जीवति सः किं लभते?

उत्तराणि:

(i) स्वबाहुबलम् आश्रित्य मानवः जीवति।

(ii) सः परत्र शुभां गतिम् लभते।

(iii) सः लोके कीर्तिं परत्र च शुभां गतिम् लभते।

4. पञ्चभिः वाक्यैः विदुरायाः चरित्रः वर्णयत

उत्तराणि:

(1) विदुरा क्षात्रधर्मरता आसीत्।

(2) विदुरा राजसंसत्सु विश्रुता आसीत्।

(3) विदुरा बहुश्रुता आसीत्।

(4) विदुरा श्रुत वाक्या आसीत्।

(5) विदुरा अभिलषति यत् तस्याः पुत्रः वीरः पुमान् भवतु।

5. अधोलिखितानां शब्दानां विलोमान् लिखत

विश्रुता, सत्या, अधर्मज्ञम्, अमित्रान्, कापुरुषः, अचिरेण, आसाद्य।

उत्तराणि:

(क) विश्रुता = अविश्रुता

(ख) सत्या = असत्या

(ग) अधर्मज्ञम् = धर्मज्ञम्

(घ) अमित्रान् = मित्रान्

(ङ) कापुरुषः = वीरपुरुषः

(च) अचिरेण = चिरेण

(छ) आसाद्य = अनासाद्य

6. 'य आत्मनः..... अचिरेण सः' अस्य श्लोकस्य आशयं हिन्दी भाषया स्पष्टीकुरुत

उत्तराणि:

प्रस्तुत श्लोक 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है जो कि महर्षि वेदव्यास प्रणीत महाभारत के

उद्योग पर्व से संकलित है। इस श्लोक में बताया गया है कि जो व्यक्ति सभी प्रकार के सुख-साधनों का त्याग करके लक्ष्मी (समृद्धि) की खोज करता है वह शीघ्र ही अपने मन्त्रियों के लिए प्रसन्नता उत्पन्न करता है। राज्य की समृद्धि के लिए प्रयासरत राजा के मन्त्रीजन उस पर हमेशा प्रसन्न ही रहते हैं।

7 MARKS QUESTIONS

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं संस्कृतेन देयम्

(क) मानो हि महतां धनम् इत्ययं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलितः?

(ख) विदुरा कुत्र विश्रुता आसीत् ?

(ग) विदुरायाः पुत्रः केन पराजितः अभवत् ?

(घ) कः स्त्री पुमान् वा न भवति?

(ङ) कः अमात्यानां हर्षं न आदधाति?

(च) अपुत्रया मात्रा किम् आभरणकृत्यं न भवति?

(छ) कस्य जीवितम् अर्थवत् भवति?

उत्तराणि:

(क) मानो हि महतां धनम् इत्ययं पाठः 'महाभारत' इति ग्रन्थात् सङ्कलितः।

(ख) विदुरा राजसंसत्सु विश्रुता आसीत् ।

(ग) विदुरायाः पुत्रः सिन्धुराजेन पराजितः अभवत्।

(घ) यः राशिवर्धनमात्रं करोति सः स्त्री पुमान् वा न भवति।

(ङ) यः आत्मनः प्रियसुखं जहाति सः अमात्यानां हर्षं न आदधाति।

(च) अपुत्रया मात्रा भोगैः जीवितेन वा आभरणकृत्यं न भवति।

(छ) यः सर्वभूतेभ्यः आश्रयं ददाति सः जीवितम् अर्थवत् भवति।

2. अधोलिखितासु सूक्ति भावार्थ हिन्दीभाषायां लिखत

(क) यस्य वृत्तं न जल्पन्ति मानवाः महदद्भुतम्।

उत्तराणि:

प्रसंग-प्रस्तुत सूक्ति 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है।

भावार्थ-इस सूक्ति में विदुरा अपने पुत्र को सम्बोधित करते हुए कहती है कि मनुष्य, जिसके आश्चर्यजनक कार्य का वर्णन न करते हों वह व्यक्ति न तो स्त्री है और न ही पुरुष है। श्रेष्ठ मनुष्य के कार्य आश्चर्यजनक होने चाहिएँ। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जिस व्यक्ति के जीवन में किए गए कार्यों में कोई विशेषता न हो, जो केवल संख्या बढ़ाने वाला है, उस व्यक्ति की गिनती कहीं पर भी नहीं होती।

(ख) मानो हि महतां धनम्।

उत्तराणि:

प्रसंग-प्रस्तुत सूक्ति 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। इस सूक्ति में महापुरुषों के धन के विषय में बताया गया है।

भावार्थ-मान ही महापुरुषों का सबसे बड़ा धन है। महापुरुष अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहते हैं। वे अपने शारीरिक सुख का त्याग करके मानव समाज के उत्थान के लिए प्रयासरत रहते हैं। उन्हें अपनी चिन्ता न होकर सम्पूर्ण मानव समाज की चिन्ता होती है।

श्लोकों के सरलार्थ एवं भावार्थ

3. कुन्ती उवाच

क्षात्रधर्मरता धन्या विदुरा दीर्घदर्शिनी।

विश्रुता राजसंसत्सु श्रुतवाक्या बहुश्रुता ॥1॥

अन्वय क्षात्रधर्मरता दीर्घदर्शिनी राजसंसत्सु विश्रुतां श्रुतवाक्या बहुश्रुता विदुरा धन्या।

शब्दार्थ क्षात्रधर्मरता = क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाली। दीर्घदर्शिनी = भविष्य का चिन्तन करने वाली। विश्रुता = प्रसिद्ध। राजसंसत्सु = राजसभाओं में। श्रुतवाक्या = न्याय पारंगत, निपुण। बहुश्रुता = विदुषी।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षिवेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में कुन्ती ने तत्कालीन विदुषी विदुरा के वैशिष्ट्य का वर्णन किया है।

सरलार्थ-क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाली, भविष्य का चिन्तन करने वाली, राज सभाओं में प्रसिद्ध न्याय निपुण विदुषी विदुरा धन्य है।

भावार्थ भाव यह है कि विदुरा पाँच गुणों के कारण धन्य है। वे गुण हैं क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाली, घटित होने वाले समय (भविष्य) के विषय में चिन्तन करने वाली, अपनी विद्वत्ता के कारण राजसभाओं में प्रसिद्ध, न्याय-कुशल एवं विदुषी महिला थी।

4. विदुरा नाम वै सत्या जगहें पुत्रमौरसम्।

निर्जितं सिन्धुराजेन शयानं दीनचेतसम् ।

अनन्दनमधर्मज्ञं द्विषतां हर्षवर्धनम् ॥2॥

अन्वय वै विदुरा नाम सत्या सिन्धुराजेन निर्जितं शयानं दीनचेतसम् अनन्दनम् अधर्मज्ञं द्विषतां हर्षवर्धनम् औरसं पुत्रं जगहें।

शब्दार्थ-सत्या = सत्य भाषण करने वाली। जगहें = निन्दा की (धिक्कारा)। औरसम् = सगे (बेटे) को। निर्जितम् = पराजित, हारे हुए। शयानम् = सोते हुए, लेटे हुए। दीनचेतसम् = उदास हृदय वाले। अनन्दनम् = दूसरों की प्रसन्नता को बढ़ाने वाले। अधर्मज्ञम् = धर्म को न जानने वाले। द्विषताम् = शत्रुओं के। हर्षवर्धनम् = हर्ष को बढ़ाने वाले, (आनन्दित करने वाले)।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में विदुरा द्वारा अपने पुत्र को धिक्कारने का वर्णन किया गया है।

सरलार्थ-निश्चय से सत्य भाषण करने वाली विदुरा (माँ) ने सिन्धुराज से पराजित, सोए हुए, उदास या खिन्न मन वाले, दूसरों को नाराज़ करने वाले, धर्म को न जानने वाले, शत्रुओं को आनन्दित करने वाले अपने सगे बेटे को धिक्कारा।

भावार्थ भाव यह है कि विदुरा के पुत्र में छः दोष थे। सिन्धुराज से हारना, सोए रहना, उदास रहना, दूसरों को प्रसन्न न करना, धर्म को न मानना, शत्रुओं को आनन्दित करना। इन अवगुणों के कारण विदुरा ने अपने पुत्र को धिक्कारा। (उसकी भर्त्सना की)।

5. उत्तिष्ठ हे कापुरुष मा शेष्वैवं पराजितः।

अमित्रान्नन्दयन्सर्वा निर्मानो बन्धुशोकदः ॥3॥

अन्वय हे कापुरुष! सर्वान् अमित्रान् नन्दयन् निर्मानः बन्धुशोकदः एवं पराजितः एवं मा शेष्व उत्तिष्ठ।

शब्दार्थ-उत्तिष्ठ = उठो। हे कापुरुष = हे कायर पुरुष। मा = मत। शेष्वैवं (शेष्व + एवम्) = इस प्रकार सोओ। पराजितः = पराजित होने वाले। अमित्रान् = शत्रुओं को। नन्दयन् = आनन्दित करते हुए। निर्मानः = सम्मान से रहित। बन्धुशोकदः = बन्धुओं को शोक प्रदान करने वाला। एवम् = इस प्रकार।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ – महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक के द्वारा विदुरा अपने पुत्र संजय की निन्दा करते हुए उसे उत्साहित कर रही है।

सरलार्थ-अरे कायर पुरुष! (अपने) सभी दुश्मनों को आनन्दित करने वाले, सम्मान से रहित, बन्धु-बान्धवों को शोक प्रदान करने वाले एवं पराजित होने वाले (तुम) इस प्रकार मत सोओ, उठो।

भावार्थ भाव यह है कि सन्तान की प्रथम शिक्षिका माता होती है। माताएँ ही अपने पुत्रों को वीर एवं साहसी बना सकती हैं। इसलिए विदुरा माता भी अपने पुत्र को वीर एवं साहसी बनने की शिक्षा देती है।

6. उद्भावायस्व वीर्यं वा तां वा गच्छ ध्रुवां गतिम्।

धर्मं पुत्राग्रतः कृत्वा किं निमित्तं हि जीवसि ॥4॥

अन्वय पुत्र! धर्मम् अग्रतः कृत्वा वीर्यं वा उद्भावाय स्व तां ध्रुवां वा गतिं गच्छ हि किं निमित्तं जीवसि? शब्दार्थ-उद्भावायस्व = प्रकट करो। वीर्यं = वीरता को। ध्रुवाम् = अटल, निश्चित। अग्रतः = आगे। निमित्तम् = कारण।

प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महता धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में विदुरा अपने पुत्र को धिक्कारती हुई समझा रही है।

सरलार्थ हे पुत्र! धर्म को आगे करके या तो वीरता को प्रकट करो अथवा उस अटल या निश्चित गति (मृत्यु) को प्राप्त करो। (इस स्थिति में) निश्चय से तम किस कारण जी रहे हो?

भावार्थ भाव यह है कि हे पुत्र! इस कायरतापूर्ण स्थिति में तुम्हारा जीवित रहना किस काम का? या तो तुम अपनी वीरता का परिचय दो अथवा युद्ध में वीरगति को प्राप्त करते हुए मृत्यु को प्राप्त करो।

7. कुरु सत्त्वं मानं च विद्धि पौरुषमात्मनः।

उद्भावाय कुलं मग्नं त्वत्कृते स्वयमेव हि ॥5॥

अन्वय-स्वयम् एव सत्त्वं मानं च कुरु आत्मनः पौरुषं विद्धि, हि त्वत्कृते मग्नं कुलम् उद्भावाय।

शब्दार्थ-सत्त्वम् = शक्ति-वैशिष्ट्य, वीरता, चैतन्य, शक्ति। विद्धि = समझो, जानो। आत्मनः = अपने। पौरुषम् = पुरुषत्व को, शूरता या बल को। उद्भावाय = प्रकट करो, व्यक्त करो। मग्नम् = डूबे हुए को। त्वत्कृते = तुम्हारे लिए (तुम्हारे कारण)।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में विदुरा अपने पुत्र को समझाते हुए कहती है कि सरलार्थ हे पुत्र! तुम स्वयं ही अपनी वीरता अथवा शक्ति वैशिष्ट्य को व्यक्त करो, सम्मान प्रकट करो एवं अपने पौरुष या पराक्रम को जानो। क्योंकि तुम्हारे लिए ही (तुम्हारे कारण ही) यह वंश अथवा कुल डूब रहा है। अतः तुम इसे प्रकट करो। अर्थात् अपने कुल की मर्यादा को जानो, समझो।

भावार्थ भाव यह है कि अपने कुल या वंश को तारने वाला अथवा बचाने वाला पुत्र ही होता है। इसलिए विदुरा अपने बेटे को वंश की मर्यादा को बचाने के लिए प्रेरित करती है।

8. यस्य वृत्तं न जल्पन्ति मानवा महद्दभुतम् ।

राशिवर्धनमात्रं स नैव स्त्री न पुनः पुमान् ॥6॥

अन्वय-मानवाः यस्य महत् अद्भुतं राशिवर्धनमात्रं वृत्तं न जल्पन्ति, सः न एव स्त्री न पुनः पुमान् (अस्ति)।

शब्दार्थ-वृत्तम् = वृत्तान्त को। जल्पन्ति = कहते हैं, बोलते हैं। महत् अद्भुतम् = अत्यन्त आश्चर्यजनक। राशिवर्धनमात्रं = मात्र संख्या बढ़ाने वाले। पुमान् = पुरुष।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में विदुरा अपने पुत्र को सम्बोधित करते हुए कहती है

सरलार्थ मनुष्य जिसके अत्यन्त आश्चर्यजनक कार्य का वर्णन न करते हों जो केवल संख्या बढ़ाने वाला हो वह मनुष्य न तो स्त्री है और न ही पुरुष है।

भावार्थ-भाव यह है कि जिस पुरुष के जीवन में किए गए, कार्यों में कोई विशेषता न हो जो केवल गिनती मात्र के लिए हो वह व्यक्ति न तो स्त्री है और न ही पुरुष है। श्रेष्ठ मनुष्य के कार्य आश्चर्यजनक होने चाहिए।

9. य आत्मनः प्रियसुखे हित्वा मृगयते श्रियम्।

अमात्यानामथो हर्षमादधात्यचिरेण सः ॥7॥

अन्वय-यः आत्मनः प्रियसुखे हित्वा श्रियम् मृगयते, अथ सः अचिरेण अमात्यानां हर्षम् आदधाति।

शब्दार्थ-हित्वा = छोड़कर। श्रियम् = सुन्दरता, शोभा, लक्ष्मी, सफलता। मृगयते = खोजता है। अचिरेण = शीघ्र ही। अमात्यानाम् = मन्त्रियों के। आदधाति = धारण करता है, उत्पन्न करता है।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में विदुरा अपने पुत्र को सम्बोधित करती हुई तथा धिक्कारती हुई कहती है

सरलार्थ-जो अपने प्रिय सुख को त्यागकर सफलता (शोभा सुन्दरता) या लक्ष्मी को खोजता है, वह शीघ्र ही मन्त्रियों के लिए हर्ष उत्पन्न करता है।

भावार्थ-भाव यह है कि जो राजा अपने शारीरिक सुख का त्याग करके सम्पूर्ण प्रजा की समृद्धि के लिए प्रयासरत रहता है, उससे सभी मन्त्री प्रसन्न रहते हैं।

10. पुत्रः उवाच

किं नु ते मामपश्यन्त्याः पृथिव्या अपि सर्वथा।

किमाभरणकृत्यं ते किं भोगैर्जीवितेन वा ॥8॥

अन्वय-नु सर्वथा माम् अपश्यन्त्याः पृथिव्याः अपि ते किम्, ते आभरणकृत्यं किम् भोगैः जीवितेन वा किम् ?

शब्दार्थ-अपश्यन्त्याः = न देखते हुए। सर्वथा = पूर्ण रूप से। आभरणकृत्यं = आलंकारिक कार्य। भोगैर्जीवितेन (भोगैः + जीवितेन) = भोगों से अथवा जीवन से।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में विदुरा के पुत्र ने उसकी बातों का उत्तर देते हुए कहा है

सरलार्थ-पुत्र बोला, निश्चय से पूर्ण रूप से मुझको न देखती हुई तुमको इस पृथ्वी का भी क्या लाभ? तुम्हारे आलंकारिक होने से भी क्या लाभ? भोगों से युक्त इस जीवन से भी क्या लाभ? अर्थात् पृथ्वी, आभूषण एवं भोग सब कुछ तुम्हारे लिए व्यर्थ हैं।

भावार्थ भाव यह है कि विदुरा का पुत्र अपनी पराजय से व्यथित है। उसने व्यथा से युक्त अपने हृदय के उद्गारों को यहाँ पर व्यक्त किया है। वह कहना चाहता है कि मेरे जीवित न रहने पर आभूषण तथा भोगयुक्त जीवन सब व्यर्थ है।

11. माता उवाच

यमाजीवन्ति पुरुषं सर्वभूतानि संजय।

पक्वं द्रुममिवासाद्य तस्य जीवितमर्थवत् ॥9॥

अन्वय संजय! सर्वभूतानि यं पुरुषं पक्वं द्रुतम् इव आसाद्य आजीवन्ति तस्य जीवितम् अर्थवत् (भवति)।

शब्दार्थ-आजीवन्ति = आश्रय या सहारा लेते हैं। सर्वभूतानि = सारे प्राणी। पक्वम् = पका हुआ। द्रुतम् = वृक्षों को। आसाद्य = प्राप्त करके। अर्थवत् = सफल।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में अपने हृदयोद्धारों को व्यक्त करने वाले अपने पुत्र से विदुरा कह रही है।

सरलार्थ हे पुत्र संजय! सभी प्राणी जिस पुरुष को पके हुए पेड़ की तरह प्राप्त करके उसका आश्रय या सहारा ग्रहण करते हैं उसी पुरुष का जीवन सफल होता है।

भावार्थ-भाव यह है कि जिस व्यक्ति का सहारा लेकर सभी सामान्य प्राणी अपना जीवन सुख से व्यतीत करते हैं, वही पुरुष सफल जीवन वाला कहलाता है। विदुरा की इच्छा है कि उसका पुत्र भी ऐसा ही व्यक्ति बने, जिसके सहारे से अन्य प्राणी अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर सकें।

12. स्वबाहुबलमाश्रित्य योऽभ्युज्जीवति मानवः।

स लोके लभते कीर्तिं परत्र च शुभां गतिम् ॥10॥

अन्वय यः मानवः स्वबाहुबलम् आश्रित्य अभि उत् जीवति सः लोके कीर्तिं लभते, परत्र च शुभाम् गतिम्. (लभते)।

शब्दार्थ-स्व = अपना। आश्रित्य = आश्रय लेकर। अभ्युज्जीवति = जीवित रहता है। कीर्तिम् = यश को। लभते = प्राप्त करता है। परत्र = परलोक में। शुभाम् = अच्छी, उत्तम।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-माता विदुरा अपने पुत्र को समझाते हुए कहती है।

सरलार्थ-जो मनुष्य अपनी भुजाओं की शक्ति का सहारा लेकर जीवित रहता है, वह (इस) लोक में यश प्राप्त करता है और परलोक में श्रेष्ठ गति को प्राप्त करता है।

भावार्थ-भाव यह है कि जिस व्यक्ति को अपने बाहुबल पर विश्वास है, वह लोक-परलोक दोनों जगह सम्मानित होता है। लोक में उसकी प्रसिद्धि होती है तथा परलोक में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

13. कुन्ती उवाच

सदश्व इव स क्षिप्तः प्रणुनो वाक्यसायकैः।

तच्चकार तथा सर्वं यथावदनुशासनम् ॥11॥

अन्वय-सः वाक्यसायकैः क्षिप्तः सत् अश्वः इव प्रणुन्नः यथावत् अनुशासन तथा तत् सर्वं चकार।

शब्दार्थ-सदश्वः (सत् + अश्वः) = अच्छा घोड़ा। क्षिप्तः = फेंका गया। प्रणुन्नः = (प्र. नुइ. क्त, पु० प्र० एकवचन) प्रेरित किया हुआ। वाक्यसायकैः = वाणी के बाणों से। चकार = किया। अनुशासनम् = आदेश, उपदेश।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'मानो हि महतां धनम्' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ महर्षि वेदव्यासकृत महाकाव्य 'महाभारत' के उद्योग पर्व से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में कुन्ती विदुरा के पुत्र के विषय में अपने विचार व्यक्त करती है।

सरलार्थ-कुन्ती बोली-वह विदुरा का पुत्र (अपनी माता के) वाणी रूपी बाणों के फैकने पर अर्थात् वाणी द्वारा उसी प्रकार प्रेरित हुआ जिस प्रकार श्रेष्ठ घोड़ा कोड़े के इशारे से ही चल पड़ता है। अर्थात् जैसा (माता का) उपदेश था उसने वैसा ही सब कुछ किया। उसने कायरता का परित्याग करके स्वाभिमान प्राप्त कर लिया।

भावार्थ भाव यह है कि विदुरा के उपदेश से उसके पुत्र ने कायरता का परित्याग कर दिया तथा स्वाभिमान को पुनः प्राप्त करके अपनी माता का मान बढ़ाया।

14. मानो हि महतां धनम् (वाणी (सरस्वती) का वसन्त गीत) Summary in Hindi

प्रस्तुत पाठ महर्षि वेदव्यास-रचित 'महाभारत' के उद्योग पर्व के 131, 134 अध्यायों से संकलित है। इस पाठ में क्षत्रिय धर्म के कर्तव्यों का उपदेश देती हुई कुन्ती के प्राचीन इतिहास का उल्लेख करते हुए विदुरा द्वारा सिन्धुराज से युद्ध में हारे हुए अपने बेटे को कायरता छोड़कर, अपने स्वाभिमान को पुनः प्राप्त करने का उपदेश दिया गया है। पाठ में वर्णित श्लोकों में मनुष्य के कुल के उत्थान, आत्मिक शक्ति तथा परोपकार की महत्ता और उसके श्रेष्ठतम स्वरूप का चित्रण है। इसके साथ ही यह पाठ मनुष्य को पुरुषार्थ तथा उद्योग की शिक्षा प्रदान करता है। वस्तुतः महाभारत को भारतीय संस्कृति का कालजयी दस्तावेज माना गया है जिसमें इतिहास, धर्म, दर्शन, साहित्य एवं कला आदि का विशद् वर्णन है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' भी महाभारत का ही अंश है। यह एक उपजीव्य काव्य ग्रन्थ भी है। महाभारत में प्रायः अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है।

MULTIPLE CHOICE QUESTIONS

अधोलिखित दश प्रश्नानां प्रदत्तोत्तरविकल्पेषु शुद्धविकल्पं लिखत

1. विदुरा कुत्र विश्रुता आसीत्?

- (A) राजसंसत्सु
- (B) कौरवेषु
- (C) महाभारतेषु
- (D) पाण्डवेषु

उत्तरम्: (A) राजसंसत्सु

2. क्षात्रधर्मरता का धन्या?

- (A) गीता
- (B) सीता
- (C) विदुरा
- (D) कुन्ती

उत्तरम्: (C) विदुरा

3. 'निर्मानः' अत्र कः समासः?

- (A) अव्ययीभावः
- (B) बहुव्रीहिः
- (C) कर्मधारयः
- (D) तत्पुरुष

उत्तरम्:(B) बहुव्रीहिः

4. 'किमाभरण' अस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति

- (A) किमा + भरण
- (B) कि + माभरण
- (C) किम् + आभरण
- (D) किं + आभरण

उत्तरम्:(C) किम् + आभरण

5. 'सत् + अश्वः' अत्र सन्धियुक्तपदम् अस्ति

- (A) सतश्वः
- (B) सदश्वः
- (C) सताश्वः
- (D) सदाश्वः

उत्तरम्:(B) सदश्वः

6. 'प्र + नुद् + क्त' पुंलिङ्ग प्रथमा वि० एकवचनम् अत्र निष्पन्न रूपम् अस्ति।

(A) प्रनुदक्तः

(B) प्रनुन्नः

(C) प्रनुदन्नः

(D) प्रणुन्नः

उत्तरम्:(D) प्रणुन्नः

7. 'शयानम्' इति पदे कः प्रत्ययः?

(A) नम्

(B) शानच्

(C) ण्यत्

(D) घञ्

उत्तरम्:(B) शानच्

8. 'अधिकरण कारके' का विभक्तिः ?

(A) सप्तमी

(B) चतुर्थी

(C) पञ्चमी

(D) तृतीया

उत्तरम्:(A) सप्तमी

9. 'अचिरेण' इति पदस्य पर्याय पदम् किम्?

- (A) चिरेण
- (B) विलम्बन
- (C) शीघ्रण
- (D) अधुना

उत्तरम्:(C) शीघ्रण

10. 'असत्या' अस्य पदस्य विलोमपदं किम्?

- (A) न सत्या
- (B) अ-सत्या
- (C) आ-सत्या
- (D) सत्या

उत्तरम्:(D) सत्या निर्देशानुसारं

FILL IN THE BLANKS

1. रिक्तस्थानानि पूरयत

(निर्देश के अनुसार रिक्त स्थान को पूरा कीजिए)

(1) 'तच्चकार' अस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति ।

उत्तराणि: तत् + चकार,

(2) निर्मानः' इति पदस्य विग्रहः अस्ति।

उत्तराणि: निर्गतो मानः यस्य सः,

(3) 'हित्वा' अत्र प्रकृति प्रत्यय विभागः अस्ति ।

उत्तराणि: हा + क्त्वा।

(4) 'उद् + भू + णिच्' लोट् म० पु० एकवचन, अत्र निष्पन्नं रूपम् अस्ति।

उत्तराणि: उद्भावयस्व,

(5) 'अमित्रान्' इति पदस्य विलोम पदम् वर्तते।

उत्तराणि: मित्रान्,

(6) 'द्रुमम्' इति पदस्य पर्यायपदम् वर्तते।

उत्तराणि: वृक्षम्।

(ग) अधोलिखितपदानां संस्कृत वाक्येषु प्रयोग करणीयः

(निम्नलिखित पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए)

(7) पौरुषम्,

उत्तराणि: पौरुषम् (पराक्रम)-सैनिकः युद्धक्षेत्रे निज पौरुषं प्रकटयति।

(8) जल्पन्ति,

उत्तराणि: जल्पन्ति (बातचीत करना)-जनाः मम अद्भुत कार्य विषये जल्पन्ति।

(9) पुमान्।

उत्तराणि: पुमान् (पुरुष) देवालये पुमान् पूजां करोति।

(10) विदुरा ओरसपुत्र।

उत्तरम् : विदुरा ओरसपुत्रं जगर्हें।

(11) हे कापुरुष मा शेष्व।

उत्तरम् : हे कापुरुष एवं पराजितः मा शेष्व।

(12) त्वत्कृते स्वयमेव मग्नं उद्भावय।

उत्तरम् : त्वत्कृते स्वयमेव मग्नं कुलम् उद्भावय।

(13) यः प्रियसुखे श्रियम् मृगयते।

उत्तरम् : यः प्रियसुखे हित्वा श्रियम् मृगयते।

(14) मामपश्यन्त्याः... अपि सर्वथा किम्?

उत्तरम् : मामपश्यन्त्याः पृथिव्या अपि सर्वथा किम्?

(15) सर्वभूतानि..... यमाजीवन्ति।

उत्तरम् : सर्वभूतानि संजय यमाजीवन्ति।